

ममृष्टीनं वरुणं यात्यपाम्
असौ काङ्गा गिरिं च पवित्रं
नामवायसलाह्ययाव, पुत्रा
ययाव द्युध्नं मयस्य ज्ञानं ॥
तायवदभुजं व. ६ लू. १
वलिद्वयान् शुभं यावत् ॥
कुमरं शुभं यावत् ॥

[illegible][illegible]

गतापविवाचनपूजा॥ दोर वड्क गजयत्न पूजा ॥ दोर
कपालपूजा॥ गुंका लूँदुदायनमशा॥ नमः नमः नमः
यमायनमशा॥ गुंका नेमसायनमशा॥ वेंववृण वनमशा॥
यैवायवनमशा॥ गुंका सुकवयनमशा॥ गुंका लोभानयनमशा॥
॥ गुंका वक्राणनमशा॥ गुंका नकेयनमशा॥ ॥ ॥ रुकादिय
गुंका रुकादिययालायनमशा॥ गुंका वक्रानकक
यनमशा॥ गुंका भूविवागलक्षयालायनमशा॥ गुंका का

कृयालायनमशा॥ गुंका कपालक्षयालायनमशा॥
कपादक्षयालायनमशा॥ गुंका भूविजिक्काक्षयालायनम
शा॥ गुंका सीमभूयक्षयालायनमशा॥ गुंका लाटवक्षयालाय
नमशा॥ गुंका भूवलक्षयालायनमशा॥ ॥ भू १६ भूसिगाः
भूववायनमशा॥ कजभूववायनमशा॥ यैवववायनमशा॥
यनमशा॥ टजकाधकववायनमशा॥ गुंका भूववायनमशा॥
मशा॥ यैवकपालीगरेववायनमशा॥ यैववायनमशा॥

[illegible]

सर्वसर्वथा॥ यथा सर्वसर्वानां गथा मां प्राप्यात्
 यथा सर्वथा॥ आरु वधिमावद॥ यथा सर्वसर्वानां
 लखनलयाव सलो गल सद्युका या॥ नूतिववव
 हललिखुलि हिंठ वद जयापन जका न्य ॥ १० ॥ यथा लाम
 लधयाव सलंथा गलथा ठस काखायक मय ॥ यथा वाकन द्वा
 म्बल लुखुलि यल का खल व हिंठ वत वा यल स वल यथा वंका
 खायक द नद ॥ ॥ यथा स वल स मा स वल यथा वृ उठि का
 ठिया कृ ए रि कृ यसा पुराय य यमं वृ कृ ॥ ११ ॥ यथा वंका

मनुष्य
 धृति
 धृति

धृति
 धृति
 धृति
 धृति
 धृति



वसिष्ठ
 वसिष्ठ
 वसिष्ठ

अर्यो
 अर्यो
 अर्यो

धृति
 धृति
 धृति

धृति
 धृति
 धृति

धृति
 धृति
 धृति



वसिष्ठ
 वसिष्ठ
 वसिष्ठ

१६ नमो राम महेन्द्राय ॥ श्री स्वा न्द उवाचा ॥ दत्त दत्त महादेव नमः
महेश्वरी कालि नमः ॥ गिरिजा गला काना ॥ यगदीना रुंदी नव नमः ॥ त्रैलोक्य
व्यासृष्टि कला व विष्णु स्वयंभूत नायवा त्वं नृप ॥ सर्वे रुद्र ना नाग ॥ १ ॥
युगयुग ॥ त्वं नमो दानमहादेव कथा मकी कथय मा ॥ नावका यिस नगु
नमो ला कय नमः ॥ कथं कविष्ठा नद्वयं नमो वृद्धे व ॥ ॥
महादेव उवाच ॥ शृणु वत्स यव श्या मिता नवका नां वध श्रवणं लो
कहितार्थाय सक्तु स्मा वस्ति नैव ना ॥ युगयुग न जानन्ति जगद्योमान

वत्स यव ॥ नकार्णव विष्णय नश्वा न्ना भंरु गवान् नृप रुद्रा ॥ सु ॥ नमो यव ॥
नमः रुद्रिनी कनाम्यदं ॥ किम्वा नृप वरुमान किमन किंरु ॥ नमो ॥ मरुद्रि
नामया द्रव्यस्य द्रा नमः नमः ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥
नमो ॥ नावदी वा रुवादी निल द्वा श्रवणं नमः ॥ मीमायव नमः ॥ यथा द्वा द्वि मः
यायु नाम नमः ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥
मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥
मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥ मरुद्रि ॥

। नाना रुचयः (ग) शास्त्रं सिद्धवत्कृतमनाहृतं ॥ यदुक्तं कमलाक्षरं सूत्रानुसृतं
ननु कीदृशं त्रिंशत्संख्यं कृतं कृतं कृतं कृतं ॥ यत्कृतं कृतं कृतं कृतं
मल्लक्य (ग) यिर्गतिं काष्ठीं वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं ॥ वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं
वर्णं कृतं वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं ॥ वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं
नाना रुचयः (ग) शास्त्रं सिद्धवत्कृतमनाहृतं ॥ यदुक्तं कमलाक्षरं सूत्रानुसृतं
ननु कीदृशं त्रिंशत्संख्यं कृतं कृतं कृतं कृतं ॥ यत्कृतं कृतं कृतं कृतं
मल्लक्य (ग) यिर्गतिं काष्ठीं वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं ॥ वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं
वर्णं कृतं वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं ॥ वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं

(ग) याल्लववदुदेल ॥ ॐ न्यादिना कदा लाधु न न ध्याष्टदत्त वृत्त ॥ (ग) याल्लववदुदेल
मा रूगण ४ यथा दत्तं यथा यथा ॥ नाना रुचयः (ग) शास्त्रं सिद्धवत्कृतमनाहृतं
ननु कीदृशं त्रिंशत्संख्यं कृतं कृतं कृतं कृतं ॥ यत्कृतं कृतं कृतं कृतं
मल्लक्य (ग) यिर्गतिं काष्ठीं वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं ॥ वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं
वर्णं कृतं वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं ॥ वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं वरिष्ठं

[illegible][illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ही

अली सनायाद रंथी नमः १ व्यासजा ॥ ३५ ॥ २ वं ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

दद रंथी नमः १ व्यासजा ॥ ३५ ॥ २ वं ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

॥ १ ॥ सकलेश्वर श्रीगणेशाय नमः ॥ २ ॥ शिवाय नमः ॥ ३ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥ गणेशाय नमः ॥ ५ ॥ गणेशाय नमः ॥ ६ ॥
 गणेशाय नमः ॥ ७ ॥ गणेशाय नमः ॥ ८ ॥ गणेशाय नमः ॥ ९ ॥
 गणेशाय नमः ॥ १० ॥ गणेशाय नमः ॥ ११ ॥ गणेशाय नमः ॥ १२ ॥
 गणेशाय नमः ॥ १३ ॥ गणेशाय नमः ॥ १४ ॥ गणेशाय नमः ॥ १५ ॥
 गणेशाय नमः ॥ १६ ॥ गणेशाय नमः ॥ १७ ॥ गणेशाय नमः ॥ १८ ॥
 गणेशाय नमः ॥ १९ ॥ गणेशाय नमः ॥ २० ॥ गणेशाय नमः ॥ २१ ॥
 गणेशाय नमः ॥ २२ ॥ गणेशाय नमः ॥ २३ ॥ गणेशाय नमः ॥ २४ ॥
 गणेशाय नमः ॥ २५ ॥ गणेशाय नमः ॥ २६ ॥ गणेशाय नमः ॥ २७ ॥
 गणेशाय नमः ॥ २८ ॥ गणेशाय नमः ॥ २९ ॥ गणेशाय नमः ॥ ३० ॥

नमः॥२॥ दूर्योधनादिगणेशाय नमः॥२॥ सद्यः विद्वाने नमः॥२॥ धर्मार्थं नमः॥
 अधर्माय नमः॥२॥ ज्ञानाय नमः॥२॥ अज्ञानाय नमः॥२॥ धर्माय नमः॥२॥ अधर्माय नमः॥२॥
 धर्माय नमः॥२॥ अतः सर्वत्र नमः॥२॥ कुलदेवताय नमः॥२॥ देवदेवताय नमः॥२॥
 आचार्याय नमः॥२॥ न्यायिद्वाने नमः॥२॥ धर्मिद्वाने नमः॥२॥ अधिः
 न्यादिनद्वाने नमः॥२॥ विस्वकर्त्रे नमः॥२॥ मन्त्रादिनिर्मात्रे नमः॥२॥
 ॥२॥ दृष्टादित्ये नमः॥२॥ सर्वकर्त्रे नमः॥२॥ सर्वदेवे नमः॥२॥
 नमः॥२॥ सर्वलोके नमः॥२॥ समनादिमनःकुले नमः॥२॥
 नमः॥२॥ सर्वदेवे नमः॥२॥ सर्वलोके नमः॥२॥

॥ श्रीनमस्तुते ॥ अत्र वासि न चैव बद्ध
न नमामि ध्यानं नृपिणी ॥ नद
न नमस्तुते न नो मिरुम नृपिणी
यदा किं न व गन्धर्व युग न न तमा
विनागर्न । संयात क च यन म
श्रीमस्य च म कालम न ॥ यदा किं न व
न न स कालम न ॥ यदा किं न व
॥ श्रीनमस्तुते ॥ अत्र वासि न चैव बद्ध
न नमामि ध्यानं नृपिणी ॥ नद
न नमस्तुते न नो मिरुम नृपिणी
यदा किं न व गन्धर्व युग न न तमा
विनागर्न । संयात क च यन म
श्रीमस्य च म कालम न ॥ यदा किं न व
न न स कालम न ॥ यदा किं न व

॥ श्रीनमस्तुते ॥ अत्र वासि न चैव बद्ध
न नमामि ध्यानं नृपिणी ॥ नद
न नमस्तुते न नो मिरुम नृपिणी
यदा किं न व गन्धर्व युग न न तमा
विनागर्न । संयात क च यन म
श्रीमस्य च म कालम न ॥ यदा किं न व
न न स कालम न ॥ यदा किं न व
॥ श्रीनमस्तुते ॥ अत्र वासि न चैव बद्ध
न नमामि ध्यानं नृपिणी ॥ नद
न नमस्तुते न नो मिरुम नृपिणी
यदा किं न व गन्धर्व युग न न तमा
विनागर्न । संयात क च यन म
श्रीमस्य च म कालम न ॥ यदा किं न व
न न स कालम न ॥ यदा किं न व

...विजय शिव धर्मपालन...
 ...द्वन्द्वन समुल्लेख...
 ...नृधिवे ४ स्वर्ग ४ सर्वव...
 ...आयुषावा सि या वायव्य वा दक्षिण...
 ...वि ४॥ ध्वनय या स्वप्न सवाक दिन नय...
 ...॥ कमा ॥ विधि कर्तृ क्रिया कर्तृ रूप...
 ...वि त्रिपुल्लु कट म... ॥ स्थान को...

...विधि...
 ...विधि...
 ...विधि...

आशा मरु काथि
 2014 I

ASIA ARCHIVES